

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. अमिता जैन
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर
मंडपसं. उपजंरंपदरनसल1 / हउंपसण्ववउ

शोधार्थी
राहुल जैन
शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर
मंडपसं. रंपदतीनस06081983 / हउंपसण्ववउ

● सारांश

मानव अपने अनुभवों का अर्थ निकालता है, समझता है, भौतिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर आत्मा के आधार पर अर्थानुभूति, भावनानुभूति तथा सोच विकसित करता है। जैसे हम सोचते हैं, निर्णय लेते हैं, उनसे संबंधित अर्थों, मूल्यों एवं दृष्टियों तक हमारी पहुंच तथा उपयोग ही आध्यात्मिक बुद्धि है। यह आत्मा की बुद्धि है, जो जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान करती है तथा व्यक्ति को अभौतिक संसार की वास्तविकताओं को समझने में मदद करती है। अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने तथा उनका उचित तरह से प्रबंधन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से अच्छी तरह से संवाद करके बेहतर परिणाम पा सकता है।

- **मूल शब्द** . आध्यात्मिक बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि, व्यावसायिक पाठ्यक्रम
- **प्रस्तावना**

हमारे प्रत्येक कार्य या योजना के दो रूप होते हैं। भाव एवं तदनुसार कृति। भावना के अनुसार कृति का होना आवश्यक है। दूसरों के कष्टों को देखकर होने वाली अनुभूति भावना से संबंधित है। जबकि उसके निवारण के लिये किये जाने वाले कार्य तदनुसार कृति है। भावना किसी भी योजना की जान होती है। कृति एक साधन मात्र है। कृति की प्रेरणास्रोत भावना ही है। कृति किसी कार्य की प्रेरक शक्ति नहीं बन सकती है। अतः विश्व भर के शिक्षाशास्त्री इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि बच्चे के समग्र विकास के लिये बौद्धिक विकास ही पर्याप्त नहीं है वरन् उसका भावात्मक विकास भी आवश्यक है।

संवेग वह भावात्मक अनुभूति है, जो व्यक्ति कि मानसिक और शारीरिक उत्तेजनापूर्ण अवस्था तथा सामान्यीकृत आंतरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है।

और जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित बाह्य व्यवहार द्वारा होती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य एक संवेदनशील प्राणी है। घटित होने वाली प्रत्येक घटना, परिस्थिति तथा व्यक्ति को देखकर उसके मन में कुछ न कुछ भाव आते रहते हैं और जब वह भावुक हो उठता है तब उसका शरीर उद्दीप्त हो जाता है, तथा उसके अन्दर तीन प्रकार की आन्तरिक अनुक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं ज्ञानात्मक, क्रियात्मक व भावात्मक इन तीनों प्रकार की अनुक्रियाओं को संवेग कहा जाता है जिस प्रकार फूल में सुगन्ध होती है उसी प्रकार हर मानवीय क्रिया में संवेग होते हैं, इसलिए इन संवेगों को कर्मों का स्रोत कहा जाता है। हम प्रत्येक कार्य में प्रसन्नता या दुःख का अनुभव करते हैं। मनुष्य के दुःख का बहुत बड़ा भाग संवेगों की अनुशासनहीनता या गलत विकास के कारण है। प्रसन्नचित्त मनुष्य वह है जो नियंत्रित संवेगों का स्वामी है। मुख्य रूप से सभी प्रकार के संवेगों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। इसमें एक को नकारात्मक संवेग और दूसरे को सकारात्मक संवेग का नाम दिया जाता है। भय, क्रोध, ईर्ष्या, जलन, घृणा आदि बिषादयुक्त संवेग जो व्यक्ति और समाज के लिए अहितकर सिद्ध होते हैं, नकारात्मक संवेग कहलाते हैं, जबकि प्रेम, आमोद, प्रमोद, सृजनात्मकता, दया, वात्सल्य, करुणा, प्यार आदि मन को आह्लादित करने वाले संवेग जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकर तथा उपयोगी सिद्ध होते हैं, सकारात्मक संवेग कहलाते हैं। दोनों प्रकार के संवेगों के सकारात्मक और नकारात्मक नामकरण से यह नहीं सोच लिया जाना चाहिए कि सकारात्मक संवेग हर अवस्था में अच्छे ही होते हैं, और नकारात्मक संवेग हर अवस्था में बुरे ही होते हैं। संवेगों के प्रभाव का मूल्यांकन करते समय उनकी तीव्रता, आवृत्ति उद्दीपक की प्रकृति और सम्बन्धित परिस्थितियों पर भी पूरा पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। अति संदेव ही बुरी होती है। संवेग चाहे वे सकारात्मक हो या नकारात्मक उनकी अधिक तीव्रता अथवा अत्यधिक आवृत्ति अहितकर ही सिद्ध होती है। दूरी ओर बुरे समझे जाने वाले नकारात्मक संवेग बहुत ही उपयोगी तथा हितकर सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर संवेग द्वारा व्यक्ति अपने आपको आने वाले खतरे का सामना करने के लिए तैयार कर सकता है। एक बच्चा जिसमें भय का संवेग ठीक प्रकार से विकसित नहीं होता साँप को पकड़ने, कुंते के मुँह में अंगुली डालने, छत से छलांग लगाने आदि दुःसाहसपूर्ण कार्यों से अपने जीवन को

खतरे में डालता रहता है। क्रोध में कभी कभी व्यक्ति अपने से ताकतवर व्यक्ति को पराजित कर देता है। संवेगों का संबंध व्यक्ति के जीवन के भावात्मक पक्ष से हैं। आकर्षक वस्तु को देखकर प्रसन्न होना, डरावनी वस्तु को देखकर डर जाना, इच्छा से प्रतिकूल कार्य होने पर क्रोधित होना, दूसरों को दुःखी देखकर दया आना आदि संवेग के उदाहरण हैं। जहाँ अनुकूल परिस्थितियाँ बालक के संवेगात्मक बुद्धि स्तर में बढ़ोतरी कर सकती है वहीं प्रतिकूल परिस्थितियों में इसमें भारी क्षय और गिरावट आ सकती है। यही कारण है, कि जिस प्रकार सामान्य बुद्धि में अनुभव, प्रशिक्षण और परिपक्वता के माध्यम से सदैव आगे बढ़ोतरी होते रहने की संभावना रहती है वहाँ संवेगात्मक बुद्धि के लिए ऐसे होते रहना आवश्यक नहीं है। जितनी संवेगात्मक बुद्धि बालक विशेष में आज है वह कल भी उतनी ही मात्रा में विद्यमान रहेगी। ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने तथा उनका उचित तरह से प्रबंधन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से अच्छी तरह से संवाद करके बेहतर परिणाम पा सकता है। एक अच्छी बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति अच्छी सफलता पा सकता है। पर सबसे ऊपर पहुँचने के लिये भावनात्मक समझ का होना भी जरूरी है। अच्छी भावनात्मक समझ रखने वाला व्यक्ति कभी भी क्रोध और खुशी के अतिरेक में आकर अनुचित कदम नहीं उठाता है। आध्यात्मिक बुद्धि, अंतरंग एवं बहिरंग सन्तुलन को बनाये रखते हुये बुद्धिमत्ता एवं भावनापूर्ण कार्य करने की योग्यता है। आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है जो प्रत्येक पक्ष का अर्थ एवं भाव निकालती है। इसी कारण इसे अन्य बुद्धियों की तुलना में उच्चतर माना गया है। मानव अपने अनुभवों का अर्थ निकालता है, समझता है, भौतिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर आत्मा के आधार पर अर्थानुभूति, भावनानुभूति तथा सोच विकसित करता है। जैसे हम सोचते हैं, निर्णय लेते हैं, उनसे संबंधित अर्थों, मूल्यों एवं दृष्टियों तक हमारी पहुँच तथा उपयोग ही आध्यात्मिक बुद्धि है। यह आत्मा की बुद्धि है, जो जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान करती है तथा व्यक्ति को अभौतिक संसार की वास्तविकताओं को समझने में मदद करती हैं। आध्यात्मिक बुद्धि वाले व्यक्ति उत्कृष्ट क्षमता से परिपूर्ण होते हैं। वे व्यवहारिक समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेते हैं। उनमें बिना कारण भय की मनः

स्थिति नहीं होती हैं। उनमें कृतज्ञता, दूरदर्शिता, शालीनता, सहानुभूति आदि गुण पाये जाते हैं।

आध्यात्मिक बुद्धि वाला व्यक्ति निष्काम कर्म, अनासक्त तथा आत्मलीन होकर कार्य करता है। आत्मबुद्धि को मनुष्य लक्ष्य में रखकर अपना कार्य करता है। जिसकी प्रज्ञा संकल्प विकल्पों से मुक्त हो जाती है, वह व्यक्ति स्थिरप्रज्ञा या आत्मिक बुद्धि वाला कहलाता है। स्थिरप्रज्ञता की साधना अथवा वीतरागता की साधना का अभ्यास हो जाता है तो प्रसन्नता की प्राप्ति अपने आप हो जाती है। जिसमें साधना की गहराई होती है, आचरणों की ऊँचाई होती है और जिसके विकार नष्ट हो जाते हैं उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। वह व्यक्ति स्थिरप्रज्ञा या आध्यात्मिक बुद्धि से युक्त है।

● अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का युग है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक सभी क्षेत्रों में तीव्र प्रतिस्पर्धा है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में प्रत्येक विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये पूरी कोशिश करता है तथा इस कड़े मुकाबले में अपने आपको साबित करने के लिये प्रत्येक विद्यार्थी अपनी सामर्थ्य के मुताबिक मेहनत करता है। ताकि वह सफलता प्राप्त करके आत्मनिर्भर बन सके। एक सफलतम व्यक्ति जो अपने सफलता के चरम पर भी आत्महत्या जैसा अनावश्यक कदम उठा लेता है वे या तो अपनी सफलता को पचा नहीं पाते हैं या और अधिक महत्वाकांक्षी हो जाते हैं, या फिर अपने तंत्र के साथ सामंजस्य बैठा पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसा होने का कारण उनका भावात्मक एवं आध्यात्मिक रूप से कमजोर होना है।

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चे को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। उसका भला चाहते हैं। परन्तु कई बार उनके चाहने व करने में बड़ा अन्तर आ जात है। ऐसा उनकी महत्वाकांक्षाओं की वजह से होता है। जिन्हें वे जाने अनजाने में बच्चे पर थोप देते हैं, या फिर भावनात्मक जुड़ाव के कारण बच्चा उस महत्वाकांक्षा को अपनी क्षमताओं के जाने बिना ओड़ लेता है इस महत्वाकांक्षा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं होने पर बच्चा अन्दर से टूट जाता है और आत्महत्या जैसा गलत कदम उठाता है। अध्यात्म विश्व की प्रगति का आधार तो नहीं, पर विश्व के कायाकल्प का

आधार अवश्य हैं। विश्व की प्रगति और समृद्धि के लिए शिक्षा, पैसा और विज्ञान का बहुत बड़ा योगदान है, पर विश्व का कायाकल्प तो अध्यात्म के द्वारा ही होगा। हमने अध्यात्म को गौण किया और केवल शिक्षा, संसाधन और समृद्धि को ही महत्व देना शुरू कर दिया तभी तो भ्रष्टाचार बढ़ा है, परिवारों में विघटन हुआ है, जीवन भर कुर्बानी देने वाले माता-पिता ही उपेक्षित होते जा रहे हैं। तकनीकी शिक्षा के साथ अगर संस्कार मूलक शिक्षा को भी महत्व दिया जाए तो शिक्षा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत होगी, जीवन प्रबंधन और राष्ट्रीय अनुशासन अपने आप जीवन में लागू होंगे। शिक्षा बाहर की प्रगति के द्वार खोलती है, जबकी अध्यात्म व्यक्ति के अंतर्मन को व्यवस्थित करता है। अंतर्मन को सकारात्मक और सुव्यवस्थित करने का नाम ही अध्यात्म है। किसी भी व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाने के लिए दो में से एक चीज़ काम करती है या तो उसे बदलने वाला इंसान अपनी आध्यात्मिक प्रज्ञा रखता हो या फिर खुद इंसान स्वयं को बदलने के प्रति कृत संकल्प हो। महावीर ने अर्जुनमाली जैसे हत्यारों का हृदय रूपान्तरित किया था और बुद्ध ने अंगुलीमाल जैसे डाकुओं का। कलिंग युद्ध के दौरान अशोक का हृदय परिवर्तन भी आध्यात्मिक बुद्धि के कारण ही संभव हो सका था। महात्मा गाँधी के सत्याग्रह जैसे आध्यात्मिक तौर-तरीकों के कारण ही अंग्रेजों का आभामंडल फीका पड़ा था। आचार्य विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण जैसे लोगों ने आध्यात्मिक बोध के कारण ही चंबल के अनेकानेक डाकुओं को आत्म समर्पण करने के लिए तैयार किया। ओसामा बिन लादेन तक महावीर और बुद्ध जैसे आध्यात्मिक बुद्धि से परिपूर्ण महापुरुषों की पहुँच नहीं हो पाई थी, नहीं तो निश्चित तौर पर लादेन जैसे आतंकवादियों को सुधारा जा सकता था।

आज संसार में छलना, वंचना, चातुर्य, होशियारी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हिंसा, बलात्कार आदि अनेक प्रकार की समस्याओं के कारण शोधार्थी ने बुद्धि के इन दोनों पक्षों को भावात्मक एवं आध्यात्मिक को शोध कार्य में समाहित किया है, ताकि लोगों का हृदय परिवर्तित करके समाज में फैली अनेक समस्याएं अपराध, हत्या, चोरी, बेईमानी, छल, ईर्ष्या आदि विसंगतियों को दूर जिया जा सकें।

- शोध के उद्देश्य

1. बीएड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. एम.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन करना।

● **शोध की परिकल्पनाएं –**

1. बीएड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. एम एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

● **उपसंहार**

माता-पिता अपनी महत्वकांक्षी इच्छायें बच्चों पर नहीं थोपे, माता-पिता का काम उनके संवेगों को पहचानना, उनकी निगरानी करना, उनको संभालना है। ताकि बच्चे भविष्य में सकारात्मक दृष्टिकोण अपना कर हर प्रकार के परिवर्तन के लिये तैयार रहें। महात्मा गॉधी के द्वारा देश की अजादी के लिए अहिंसा का पथ अपनाना उनकी आध्यात्मिक दृष्टि का ही परिणाम था। अपने परिवार समाज और देश के लिए अपनी जवाबदारियों को निभाना आध्यात्मिक जीवन की पहली कसौटी है। वर्तमान समय में पूरे विश्व में आध्यात्मिक बुद्धि के प्रसार की जरूरत है। अगर आध्यात्मिक बुद्धि का प्रसार नहीं होगा तो इंसान केवल मशीन बनकर रह जायेगा। विश्व शांति, प्रेम, भाईचारा, आंतरिक सुख, सकारात्मक जीवन दृष्टि और असाधारण चेतना का मालिक होने के लिए अध्यात्म को आत्मसात करना अमृत और संजीवनी प्राप्त करने की तरह है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ललितप्रभ, चन्द्रप्रभ (मार्च 2014) : 'संबोधि टाइम्स' जितयशा फाउण्डेशन, संबोधि धाम, कायलाना रोड़, जोधपुर, पृ.सं. 16
2. आचार्य महाप्रज्ञ (1994) : 'चित्त और मन' जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं, राज.

3. आचार्य महाश्रमण (2013) : 'सम्पन्न बनो' जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं, राज.
4. कपिल, एच.के. (2009) : 'अनुसंधान विधिया' एस.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा।
5. मुर्डिया, सुनिता (2014) : 'आध्यात्मिक बुद्धि' हिमांशु पब्लिकेशन्स, हिरण मगरी, उदयपुर, पृ.सं. 24 से 27
6. राठौड, अमी (2014) : 'संवेगात्मक बुद्धि' हिमांशु पब्लिकेशन्स, हिरण मगरी, उदयपुर, पृ.सं. 45-46।

